नम्र चित्त होकर चलने से मिलेगा सभी का सहयोग
देह अभिमान से अब कर लो अपना पूरा ही वियोग
बेहद बाप के बच्चे हो बन जाओ बेहद के सेवाधारी
अपना हर संकल्प करो होकर बेहद के कल्याणकारी
करो बेहद संस्कारों का त्याग करो बेहद की तपस्या
मिटा डालो इस संसार से पांच विकारों की समस्या
खुद को बनाओ हर सेकण्ड के अखण्ड तपस्वी मूरत
अपनी चलन और चेहरे में दिखे ब्रह्मा बाप की सूरत
व्यर्थ संकल्पों की सभी दीवारें दृढ़ निश्चय से गिराओ
खुद को अल्लाह अवलदीन का चिराग बनाकर

चलाओ
समय प्रमाण व्यर्थ संकल्पों का नामो निशान मिटाओ
त्यागकर निद्रा सारे विश्व में पवित्र वाइब्रेशन फैलाओ
पहनो कवच नम्रता का अपने संस्कारों को ना टकराओ
व्यर्थ संकल्प का रावण जलाकर सच्ची दीवाली मनाओ
कभी ना देखो व्यर्थ किसी का ना देखो किसी की गलती
स्वयं के संस्कारों को बदलने से ये सृष्टि सारी बदलती
क्रोध की अग्नि को बुझाओ डालकर स्नेह का मीठा पानी
सच्चाई की राह पर चलकर हमें अपनी तकदीर बनानी
ॐ शांति